E-content for student of Patliputra University Patna.

B.A Hons,part-1

Subject-Hindi,Paper-2

संदर्भ-गद्य विधाएँ (प्रसाद के नाटक-चंद्रगुप्त)

--डॉ प्रफुल्ल कुमार,एसोसिएट प्रोफेसर,अध्यक्ष-हिन्दी विभाग आर आर एस कॉलेज मोकामा। पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।

Title/Topic-चंद्रगुप्त नाटक के आधार पर जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषताओं पर प्रकाश डालें । अथवा जयशंकर प्रसाद मूलतः ऐतिहासिक नाटककार हैं'उनके 'चंद्रगुप्त' 'नाटक के आधार पर इस कथन की पुष्टि करें।

प्रसाद ने भारतेंदु द्वारा स्थापित नाटक और रंगमंच की परंपरा को नया जीवन और नई दिशा प्रदान की ।प्रसाद ने साहित्यिक रंगमंच की स्वयं कल्पना की और उस मानसिक रंगमंच की पृष्ठभूमि में ही नाटक लिखे, परंतु उसे व्यवहारिक रूप नहीं दे सके। फलतः अन्य सभी दृष्टियों से उत्कृष्ट होने के बावजूद अभिनय की दृष्टि से उनके नाटक सफल नहीं हो सके,जो नाटक और रंगमंच की दृष्टि से अपेक्षित होता है। मंच पर प्रस्तुत होने पर ही नाटक पूर्ण माना और समझा जाता है। रंगमंचीयता के अभाव में नाटक को पूर्ण नहीं माना जा सकता है।

उन्होंने अपने काल में ऐतिहासिक नाटक अजातशत्रु, जनमेजय का नाग यज्ञ, राजश्री, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी ,चंद्रगुप्त आदि लिखा। प्रसाद जी मुख्यतः ऐतिहासिक नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित हैं वे रोमानी प्रकृति के कवि थे ।अतः उन्होंने देश में गौरव में अतीत को अपने नाटकों का विषय बनाया। उनके नाटकों में पौराणिक युग जन्मेजय का नाग यज्ञ से लेकर हर्षवर्धन युग राज्यश्री तक के भारतीय इतिहास की गौरवमयी झांकी देखने को मिलती है। शायद ही हिन्दी के किसी अन्य लेखक ने भारतीय संस्कृति ,समृद्धि, शक्ति और गौरव का एहसास पर चित्र प्रस्तुत किया। उनके नाटकों के चरित्र, शील, शक्ति और शौर्य के प्राण मंत्र विग्रह है ।इतिहास प्रसिद्ध पात्रों में नया जीवन भर दिया गया है।गौतम बुद्ध ,चाणक्य, चंद्रगुप्त ,स्कंदगुप्त, राज्यश्री, ध्रुवस्वामिनी आदि ऐतिहासिक पात्रों के जो रूप प्रसाद के नाटकों में उभरे हैं, वे सजीव होकर हमारे सामने उपस्थित हुए हैं। इतिहास अपने को दोहराता है, इस उक्ति का उन्होंने बड़ा सुंदर उपयोग अपने नाटकों में की है। उनका नाटक ध्रुवस्वामिनी में युगीन समस्याओं का ऐसा समावेश हुआ है कि वह ऐतिहासिक नाटक न रहकर समस्या नाटक बन गया है।

प्रसाद के नाटकों में शिल्प पर कई तरह के प्रभाव दिखाई पड़ते हैं। वह संस्कृत नाट्य साहित्य, अंग्रेजी नाट्य साहित्य से प्रभावित थे। वे शेक्सपियर आदि से प्रभावित थे। ध्रुवस्वामिनी में इस प्रभाव की कुछ झलक दिखाई देती है। कलात्मक उत्कर्ष की दृष्टि से प्रसाद के प्रमुख नाटक 3 हैं- स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी ।स्कंद गुप्त में समृद्धि और ऐश्वर्य के शिखर पर आसीन गुप्त साम्राज्य की उस

स्थिति का चित्रण है जहां आंतरिक कलह पारिवारिक संघर्ष और विदेशी आक्रमणों के फलस्वरूप उसके भावी के लक्षण प्रकट होने लगे। विषय और रचना शिल्प दोनों की दृष्टि से यह प्रसाद का सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जाता है ।भारतीय और पाश्चात्य नाटक पद्धतियों का इतना सुंदर समन्वय उनके अन्य किसी नाटक में नहीं मिलता ।

चंद्रगुप्त की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विदेशियों से भारत के संघर्ष और उस संघर्ष में अंतर भारत की विजय की थीम उठाई गई है ।प्रशांत के मन में भारत की पराधीनता को लेकर गहरी व्यथा और ऐसा लगता है जैसे उन्होंने एक ऐतिहासिक प्रसंग के माध्यम से अपने विश्वास को वाणी दी। इस दृष्टि से स्कन्दगुप्त से भी अधिक उदार चंद्रगुप्त की कथा वस्तु है। चाणक्य, चंद्रगुप्त, मालविका कार्नेलिया आदि के रूप में उन्होंने अनेक प्रभावशाली चरित्र दिए हैं ।परंतु शिल्प की दृष्टि से यह अपेक्षाकृत शिथिल रचना है ।इसकी कथा में वह संगठन, संतुलन और एकता नहीं है जो स्कंद गुप्त में है। अंकों और दृश्यों का विभाजन भी असंगत है। नाटकीय अनुभूतियों की अवहेलना चंद्रगुप्त में सीमा तक रमन कर गई है। फिर भी चंद्रगुप्त हिन्दी की एक श्रेष्ठ नाट्य रचना है।। प्रसाद की प्रतिभा ने इसकी त्रुटियों को ढंक दिया है।

ध्रुवस्वामिनी मूलतः ऐतिहासिक नाटक है,परंतु समस्या प्रमुख रूप में है। इसमें तलाक और पुनर्विवाह की समस्या को बड़े कौशल से उठाया गया है। ध्रुवस्वामिनी से पता चलता है कि प्रसाद कितने युग धर्म थे।' कामना' और 'एक घूंट' भी उनके उल्लेखनीय नाटक हैं। नाट्य-शिल्प की दिशा में प्रसाद जी का यह प्रयोग उपेक्षित नहीं माना जा सकता है। प्रसाद जी और श्रेष्ठ लेखकों की तरह सहयोग धर्मी थे। उन्होंने कभी भी अपने आपको नहीं दोहराया ।उनके आरंभिक नाटक उनकी प्रयोग धर्मिता के प्रमाण हैं ।प्रसाद को जब इन नाटकों से संतोष नहीं हुआ तो उन्होंने अपने परवर्ती नाटकों में विषय और दोनों क्षेत्रों में निरंतर प्रयोग किए। प्रसाद को रंगमंच नहीं मिला इस कारण उनके शिल्प विषयक प्रयोग अंत तक पूर्ण व्यवहारिक नहीं बन सके फिर भी उन्होंने हिन्दी को उत्कर्ष प्रदान किया और रंगमंच को चुनौती दी। संभव है हिंदी का भावी रंगमंच प्रसाद के नाटकों को सफल और प्रभावशाली मंचन में समर्थ हो सके।

इस संबंध में शांता गांधी के वक्तव्य को उद्धृत करना अपेक्षित होगा।। उन्होंने लिखा है कि कलकत्ते में प्रदर्शन के अनुभव से मेरा विश्वास दृढ़ हो गया कि ऐसे गंभीर नाटक को प्रस्तुत करने के लिए जरूरी समुचित साधन हो, अभिनय प्रतिभा और पर्याप्त समय सुलभ हो तो यह नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है और जरूर किया जाना चाहिए ।आशा करना चाहिए कि कभी न कभी यह अवश्य संभव हो सकेगा ।पर यह कब संभव होगा? कब तक इसकी प्रतीक्षा करनी होगी? यह अलग प्रश्न है ।प्रसाद के नाटक रंगमंच की दृष्टि से हिंदी नाटक की पूंजी भले ही न बन सकी हो पर इससे साहित्य का संसार अवश्य लाभान्वित हुआ है। हिंदी भाषा में अधिक अच्छे नाटक नहीं है, पर ऐसे ऐतिहासिक कथाओं से जुड़े हुए नाटक हिन्दी साहित्य का भंडार भरने के लिए पर्याप्त हैं। उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए

हिंदी रंगमंच में नाटक के कर्मियों एवं प्रस्तुतकर्ताओ की क्षमता और आत्मविश्वास से ऐसे प्रसाद के नाटक अवश्य एक दिन रंगमंच पर प्रस्तुत किए जा सकेंगे। ऐसी आशा रखनी चाहिए।

******